विनोबा भावे के राजनीतिक दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

*डॉ. शक्ति सिंह शेखावत

शोध सारांश

विनोबा भावे आधुनिक भारतीय राजनीति के उन चिंतकों में माने जाते है जिन्होंने महात्मा गाँधी की वैचारिक परम्परा को केवल आगे ही नहीं बढ़ाया,बल्कि उसे व्यावहारिक सामाजिक प्रयोगों के माध्यम से नया आयाम दिया। उनका राजनीतिक चिंतन सत्ता, शासन और प्रभुत्व की संकीर्ण परिभाषाओं से परे जाकर नैतिकता, अहिंसा, आत्मसंयम, त्याग और मानव-सेवा पर आधारित है। विनोबा के अनुसार राजनीति का अंतिम उद्देश्य सत्ता प्राप्ति नहीं, बल्कि मानव कल्याण और समाज में नैतिक चेतना का विकास होना चाहिए। विनोबा ने लोकतंत्र, राज्य, शासन, सत्ता के विकेन्द्रीकरण, व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा की व्यावहारिक पालना, आर्थिक विषमता से उत्पन्न सामाजिक और प्रकारान्तर से राजनीतिक संघर्षो के कारणों का विश्लेषण कर उसके विश्वसनीय निदान का विकल्प प्रस्तुत किया । विनोबा ने एक उदारवादी विचारक के रूप में व्यक्ति के व्यक्तित्व की स्वतंत्रता के साथ साथ एक समाजवादी की तरह कुटुंब एवं ग्राम की सामुदायिकता तथा आर्थिक विषमता के प्रश्न में हिंसा रहित साम्यवादी दर्शन भी दिया अर्थात विनोबा का चिंतन किसी एक "वाद" से नियंत्रित न होकर समन्वय, सहिष्णुता और मानव कल्याण पर आधारित है, जो समकालीन विश्व की संघर्ष, हिंसा, असमानता और सत्ता केंद्रित राजनीति के लिए एक वैकल्पिक नैतिक मार्ग प्रस्तुत करता है। यह लेख विनोबा भावे के राज्य, राजनीति,लोकतंत्र, अहिंसा, सर्वोदय, भूदान-सम्पत्ति दान, विकेन्द्रीकरण, ग्राम-स्वराज तथा 'जय जगत' जैसे अंतरराष्ट्रीय मानवतावादी दृष्टिकोण का विश्लेषण प्रस्तुत करता है ।

संकेताक्षर - सर्वोदय, अहिंसा, साम्यवाद, लोकशाही, जय जगत, भूदान,सम्पत्ति दान, सम्मत्ति दान

परिचयात्मक

स्वतंत्रता से पूर्व एवं पश्चात आधुनिक भारतीय राजनीति को प्रभावित करने के साथ-साथ राजनीतिक चिंतन और दर्शन को गांधीवादी परम्परा के अनुसार आगे बढ़ाने में विनोबा भावे का महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

तत्कालीन बम्बई राज्य के कोलाबा जिले में 11 सितम्बर 1895 ई. को विनोबा का जन्म हुवा एवं 7 जून 1916 को महात्मा गांधी से मुलाकात हुई और उसी दिन से उनके वैचारिक एवं सार्वजनिक जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ हुवा।[1] विनोबा ने गांधीवाद के मूल तत्त्व सत्य और अहिंसा को सर्वोत्तम मूल्य के रूप में अपने वचन एवं कर्म के माध्यम से अंगीकार कर लिया l विनोबा ने राजनीती को नैतिकता,आध्यात्मिकता, आत्मसंयम, त्याग और मानव सेवा के उत्तरदायित्व से जोड़ा ।

विनोवा भावे के विचारों में कट्टरता एवं प्रतिबद्धता का कोई स्थान नहीं है। स्वयं विनोबा के शब्दों में, "मैं कोई वादी नहीं हूँ । कोई भी मुझे अपना विचार जंचा ले और कोई भी मेरा विचार जंचा ले। प्रेम और विचार में जो शक्ति है, वह और किसी में नहीं है। किसी संस्था में नही, सरकार में नही, किसी प्रकार के वाद में नहीं,शास्त्र में नहीं,शस्त्र में नहीं। मेरा मानना है कि शक्ति प्रेम और विचार में ही है। इसलिए पक्के मतों की अपेक्षा मुझसे न करे। विचारों की अपेक्षा रखे । मै प्रतिक्षण बदलने वाला व्यक्ति हूँ l "[2] अर्थात विनोबा किसी मत, वाद या प्रतिबद्ध विचारधारा के ना ही संस्थापक है और ना ही समर्थक, विनोबा के अनुसार जनता कभी भी वाद निष्ठ नहीं होती,वह तो जीवन निष्ठ होती है। जीवन सुचारू रूप से चलता रहे तो वाद या पद्धति कोई सी भी क्यों न हो, उसकी फिक्र नहीं होती l[3] विनोबा ने विविध क्षेत्रों यथा राजनीतिक, सामाजिक,आर्थिक, सांस्कृतिक,धार्मिक और आध्यात्मिक में मानव और विश्व कल्याण है क्षेत्र में अपने विचारों का प्रकटीकरण किया । उनके विचार शांति, अहिंसा , प्रेम,सद्भाव, समन्वय और सहयोग के आधार पर समाज परिवर्तन का दृष्टिकोण धर्म, अध्यात्म और ईश्वर में पूर्णत विश्वास रखते हुवे एक कर्मनिष्ठ व्यक्ति का अनुभवजन्य जीवन दर्शन है। विनोबा के अनुसार जो मानव के दुःख निवारण का कायल होता है,वह कभी तर्क प्रधान दर्शन का ढांचा, वाद या 'आइडियालॉजी' तैयार करने में नहीं लगता। आगे चलकर ये ही स्वतंत्र चेतना मनुष्य के लिए पंजर (पिजड़े) बन जाते है। प्रवाही जीवन के सहज विकास में रूकावट डालते है। विनोबा और गांधी की जीवन व्यापी खोजों को सदा के लिए परिपूर्ण दर्शन निर्माण करण चाहे तो इन खोजों का प्राण ही निकल जायेगा।[4] अर्थात विनोबा के जीवन और विचार से किसी प्रतिबद्ध विचारधारा का निर्माण नहीं किया जा सकता । लोक कल्याण और विश्वबन्धुत्व हेतु विचारो का दर्शन उपलब्ध हो सकता है। विनोबा भावे द्वारा प्रदत्त राजनीतिक विचारों पर भी इसी समन्वय और सहिष्णुता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। विनोबा ने राजनीति को सत्ता और शासन की संकीर्ण परिभाषा से बाहर निकाल कर उसे नैतिकता, आत्मसंयम और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोडा। विनोबा ने लोकतंत्र,सीमित राजसत्ता, विकेन्द्रीकरण ग्राम स्वराज्य,राष्ट्र के साथ साथ जय जगत की परिकल्पना के साथ राजनीतिक दर्शन को मानव हितार्थ विचार प्रदत्त किये ।

राजनीति संबंधी विचार

राजनीति की समस्त परम्परागत परिभाषाओं के आधार पर राजनीति को शासन, सत्ता, शक्ति, प्रभुत्व की प्राप्ति के माध्यम से समाज में उपलब्ध संसाधनों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर अपने अनुसार उसका वितरण करने की व्यवस्था के लिए किये गये प्रत्येक प्रयास चाहे वह उचित या अनुचित साधनों के माध्यम से किये गए हो, ऐसे प्रयासों हेतु संपादित की गई समस्त गतिविधियां राजनीति है जबकि विनोबा ने राजनीति को सत्ता, शासन और शक्ति संघर्ष की परम्परागत परिभाषा की बजाय उसे नैतिकता, आत्मसंयम ,त्याग, सत्य,अहिंसा, अध्यात्म को सामाजिक उत्तरदायित्व से सम्बद्ध कर राजनीति को सामान्य मानवी की सेवा का माध्यम स्वीकार किया। साथ ही राजनीति की परम्परागत समझ के प्रति विनोबा नकारात्मक सोच रखते है l विनोबा के अनुसार सियासत की कीमत जूते से ज्यादा नहीं है l आज देश में और दुनियां में जो सियासत चल रही है, वह सिर पर उठाने की चीज नहीं है ज्यादा से ज्यादा पाँव पर रखने की चीज हो सकती है l[5] अर्थात विनोबा राजनीति के परम्परागत दृष्टिकोण की बजाय सेवा का अवसर और साधन मानते है l विनोबा की राजनीती का केंद्र भौतिक नहीं आध्यात्मिक है l भारतीय राजनीतिक चिंतन परम्परा में भी राजनीती को सत्ता और शासन की बजाय जनकल्याण और नैतिक कर्तव्य से जोड़ा और विनोबा ने भी इसी परम्परा का पालन करते हुवे राजनीती को नैतिक आधार प्रदान किया l विनोबा भावे के अनुसार राजनीती और नैतिकता का पृथक्करण आधुनिक सभ्यता का सबसे बड़ा संकट है l विनोबा अधिकार केंद्रित राजनीती के स्थान पर कर्तव्य केंद्रित राजनीती को स्वीकार करते है l साथ ही विनोबा सत्ता की राजनीति के बदले सेवा की लोक नीति अपनाने पर बल देते हैं l विनोबा की राजनीति अधिकार, सत्ता और शक्ति के स्थान पर कर्तव्य, सेवा और संयम को स्थान प्रदान करती है l

राज्य संबंधी विचार

राजनीतिक चिंतन में राज्य सम्बन्धी विचार सबसे ज्यादा विचारोत्तेजक रहे हैं। आदर्शवादी दर्शन राज्य को ईश्वर तुल्य मानते हुवे प्रत्येक स्थिति में व्यक्ति से राज्य की भक्ति की अपेक्षा करता है अर्थात व्यक्ति साधन है और राज्य साध्य, वहीं साम्यवादी दर्शन राज्य को शोषण का यन्त्र बताते हुवे राज्य के अंत की परिकल्पना करता है। उदारवादी चिंतक राज्य को साथन और व्यक्ति को साध्य के रूप में स्वीकार करते हैं। विनोबा राज्य को एक आवश्यक किंतु सीमित संस्था मानते थे। वे मानते थे कि जैसे समाज नैतिक रूप से विकसित होगा , राज्य की भूमिका स्वत सीमित हो जायेगी । यह दृष्टि न तो पूर्ण अराजकवादी है और न ही राज्य की पूजा । विनोबा के राज्य संबंधी विचार राजनीति के सभी परम्परागत दृष्टिकोण के मध्य समन्वय स्थापित करता है l विनोबा के अनुसार व्यक्ति और राज्य के मध्य साध्य और साधन का ही संबंध ना होकर लोक कल्याण हेतु दोनों के मध्य एक पूरक संबंध स्थापित करता है l

विनोबा ने मार्क्सवाद के सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद के विमत में कहा है कि सर्वग्रासी सत्ता के रास्ते पर राज्य विलयन का मुकाम कभी आ नहीं सकता l यदि आज ही हर नागरिक अपनी जिम्मेदारी समझ कर बाहरी अंकुश और सत्ता के बदले आंतरिक प्रेरणा से कर्तव्य करना शुरु कर ले तो आगे चलकर सत्ता का विराट केंद्रित स्वरूप राज्य शासन का विलय हो सकेगा । जो कम से कम शासन चलाये, वही सर्वोत्तम राज्य व्यवस्था है l[6] विनोबा कहते है कि मैं स्वयं किसी सत्ता को नही मानता, इसलिए किसी पर सत्ता चलाना भी नहीं चाहता l सत्ता का तो मैं दुश्मन ही हूँ l सेवा को काटने वाली यह चीज है l[7] विनोबा राज्य और स्वराज्य में भेद करते हुवे 1940 में काराग्रहवास में लिखी पुस्तक "स्वराज्य शास्त्र" के अनुसार,राज्य एक बात है और स्वराज दूसरी बात है l राज्य हिंसा से प्राप्त किया जा सकता है, परंतु स्वराज्य बिना अहिंसा के असंभव है l स्वराज्य यानी ऐसा राज्य जो हर एक को अपना लगे यानी सबका राज्य अर्थात राम राज्य l[8] शासन के साथ-साथ जन भागीदारी की राजव्यवस्था के विनोबा समर्थक हैं l जो कम से कम शासन चलाएं वही सर्वोत्तम राज्य व्यवस्था है l सही लोकसत्ता में कर्तव्य विभाजन और विचार शासन चलेगा l सत्ता के नष्ट होने के माने हैं, छोटी-छोटी इकाइयों में उसका बंटवारा होना l अर्थात सत्ता का पूर्णतया विकेंद्रीकरण करना चाहिए l जिससे राज्य सत्ता सीमित हो जाए l विनोबा कहते हैं कि हमें भी राज्य ऐसा ही चलाना होगा कि लोगों को शंका हो जाए कि कोई राज्य सत्ता है या नहीं l "हिंदुस्तान में शायद राज्य सत्ता नहीं है " ऐसा भी लोग कहें, तभी वह हमारा अहिंसक राज्य होगा l[9] अर्थात विनोबा एक दार्शनिक अराजकतावादी के साथ साथ आवश्यक किन्तु सीमित राज्य के पक्ष पोषक रहे है जहाँ जनता की स्वतंत्रता हो, जनता आत्मनिर्भर हो साथ ही जनता आवश्यकता पड़ने पर राज्य का सहयोग भी करें l

अहिंसा

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में गांधी अहिंसा के सर्वाधिक स्वीकार्य चिंतक है तथा गाँधी और विनोबा ना केवल समकक्ष रहे वरन गुरू - शिष्य संबंध के साथ सत्य और अहिंसा को स्वीकार करते थे l अर्थात विनोबा ने अहिंसा को जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में गाँधी से पूर्णतया ग्रहण किया l विनोबा भावे ने इस मूल्य को अपने पूर्ववर्ती विचारक गांधी से पूर्णतया ग्रहण किया l विनोबा के लिए राजनीति में अहिंसा का महत्व केवल अहिंसक प्रतिकार या अहिंसक आंदोलन ही नहीं है, वरन राजनीति का नैतिक आधार अहिंसा है l विनोबा सामाजिक परिवर्तन के लिए हिंसा के साधन को स्वीकार नहीं करते l उनके अनुसार युद्ध और हिंसात्मक क्रांति से यह मनोवैज्ञानिक परिवर्तन उत्पन्न नहीं किया जा सकता l यह बुद्ध और ईसा तथा गीता के उपदेशों के मार्ग से हो सकता है l विनोबा कहते हैं कि जब तक वर्तमान सामाजिक स्थिति जिसका आधार असमानता संघर्ष और मतभेद हैं, बदलकर समानता और सहयोग के आधार पर स्थापित नहीं की जाती मानव की मुक्ति नहीं हो सकती l[10] विनोबा बिना हिंसा के संपूर्ण

सामाजिक ढांचे में परिवर्तन करना चाहते हैं l विनोबा समस्त प्रकार के संघर्षों का निदान अहिंसा के माध्यम से करना चाहते थे विनोबा कहते हैं कि मेरा अपना विश्वास है कि कोई मसला अहिंसा से ही हल हो सकता है लेकिन उसके लिए हृदय शुद्धि की आवश्यकता होती है l[11] विनोबा साध्य के साथ- साथ साधनों की पवित्रता पर बल देते हैं, और सत्य और अहिंसा के मूल्यों का पालन किए बिना साधनों का पवित्र होना असंभव है, साथ ही साधनों की पवित्रता के अभाव में हृदय की शुद्धि असम्भव है l विनोबा का उपाय प्रेम का उपाय है और उसका आधार मानव के आंतरिक शिवत्व में विश्वास है l कम्युनिस्टों से हिंसा के परित्याग की प्रार्थना करते हुए विनोबा ने कहा कि यदि वह मेरी बात मान लें तो कम्युनिज्म के प्रचारार्थ में उनके साथ भारत के कोने-कोने में जाऊंगा अर्थात विनोबा का किसी वाद से कोई विरोध नहीं है अपितु अहिंसा के प्रति सच्चा प्रेम है, जो अहिंसा के साथ हैं वह विनोबा के साथ हैं l कम्युनिस्ट की तरह हम यह नहीं मानते हैं कि क्रांति के लिए हिंसा के साधनों से काम लेना ही चाहिए,हिंसा के बिना क्रांति हो ही नहीं सकती, हमारा विश्वास है कि भारत जैसे देश में जनतन्त्रात्मक राज्य में हिंसक साधनों का अवलंबन किए बिना केवल बैलट बॉक्स के बल पर राज्य क्रांति की जा सकेगी, उसके लिए लोकमत तैयार करने में 20-25 साल लग जाए तो भी कोई हर्ज नहीं l[12] विनोबा सामाजिक परिवर्तन के हिंसक और यथाशीघ्र उपायों के बजाय अहिंसात्मक उपायों के साथ साथ सभी पक्षो के मध्य समन्वय और सहयोग के माध्यम से करने पर बल देते है l

लोकशाही

विनोबा राज्य और शासन की शक्ति की तुलना में जनता को सशक्त करने पर बल देते हैं l विनोबा कहते हैं कि हमें स्वतंत्र लोक शक्ति निर्माण करनी चाहिए l अर्थात हिंसा शक्ति की विरोधी और दंड शक्ति से भिन्न लोक शक्ति हमें प्रकट करनी चाहिए l[13] विनोबा जनता के ऊपर नियंत्रित करने वाली राज्य सत्ता को स्वीकार नहीं करते हैं l विनोबा कहते हैं कि समाज क्रांति के तीन तरीके हैं पहला कत्ल दूसरा कानून और तीसरा करुणा l कत्ल का रास्ता सामान्य जनता का रास्ता नहीं l शस्त्र को मजबूती से पकड़ने वाला कोई तानाशाह, लश्करशाह जनता के सर पर सवार हो जाता है l कानून का तरीका लोकतंत्र में भी सफल नहीं हो पाता, जबकि लोग हृदय से सुधार परिवर्तन न चाहते हो l विनोबा कानून से समाज परिवर्तन के विरुद्ध नहीं l लेकिन वह मानते हैं कि लोकतंत्र में कानून के पीछे लोगों की सक्रिय सम्मति खड़ी होनी चाहिए, तभी वह सफल हो सकता है l[14] अर्थात विनोबा स्पष्ट रूप से लोकतंत्र में जन सहमति और जनभागीदारी पर बल देते हैं l अर्थात विनोबा के लोकशाही संबंधी विचार अब्राहम लिंकन के लोकतंत्र की सर्वमान्य परिभाषा कि जनता का, जनता के लिए और जनता के द्वारा शासन ही लोकतंत्र है का यथार्थ में साकार स्वरूप है l

सर्वोदय

गांधी प्रदत्त सर्वोदय का विचार भावे के समस्त दर्शन का मूल आधार हैं l विनोबा का दर्शन मानव कल्याण और मानव सेवार्थ है जो की मूल भारतीय दर्शन हैं को अपनाते हुए सर्वोदय दर्शन की अवधारणा के माध्यम से समाज के प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण की बात करते हैं, विनोबा के अनुसार सर्वोदय का एक बहुत ही सरल और स्पष्ट अर्थ है कि हमें अपनी कमाई का खाना चाहिए, दूसरों की कमाई का न खाना चाहिए l हमें अपना भार दूसरों पर न डालना चाहिए l दूसरों का धन किसी तरह हम ले ले तो इसे अपनी कमाई नहीं कहा जा सकता, कमाई का अर्थ है प्रत्यक्ष पैदाइश l[15] वास्तव में सर्वोदय शब्द का मूल अंत्योदय की कल्पना में ही है l सर्वोदय में सबसे नीची श्रेणी वालों, अंत्यो का भी उदय हैं l पश्चिम के लोगों ने हमारे सामने यह ध्येय रखा है कि अधिक से अधिक लोगों का अधिक से अधिक सुख हो l वास्तव में इसी में बहुसंख्यकों और अल्पसंख्यकों के झगड़ों का बीज निहित है,लेकिन सर्वोदय की दृष्टि जैसा की गीता ने कहा है, सर्वभूतों के हितों में है ।[16] मानव के समान तत्वों के आधार पर ही एकमय समाज खड़ा किया सकता है और वही सर्वोदय है l

भूदान और सम्पति दान

विनोबा के लिए सर्वोदय का दर्शन एक आदर्श लक्ष्य था जिसका आशय था सब का उदय l समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता के चलते समाज के निर्धन वर्ग का उदय कैसे किया जाए इस हेतु साम्यवाद ने हिंसक क्रांति के माध्यम से आर्थिक विषमता को समाप्त करने का दर्शन प्रदान किया उसके विकल्प में विनोबा ने भूदान का दर्शन प्रस्तुत किया भारत में कम्युनिज्म का सबसे बड़ा जवाब भूदान ही है l विनोबा कहते हैं कि कम्युनिज्म के उन्मूलन के लिए देश को भूदान आंदोलन को सफल बनाना चाहिए, सरकार तत्काल तो कम्युनिज्म का प्रसार रोक सकती है किंतु भूमि समस्या के स्थाई हल के बिना वह उसका उन्मूलन नहीं कर सकती l[17] भविष्य में देश में भोजन तभी मिल सकता है जब हम देश के लिए समाजवादी अर्थव्यवस्था माने, इसके लिए भूमि की समाजवादी अर्थव्यवस्था माने इस कारण भूमि के समाजवादीकरण करने की आवश्यकता है l भूदान का असली महत्व तो यह है l[18] भूदान चुनौती है कम्युनिस्ट को की संसार को दिखाना चाहते हैं कि बिना किसी मुआवजे के भूमिपति अपनी बचत की जमीन अहिंसात्मक ढंग से समझाने बुझाने से दान कर सकते हैं l भूदान अहिंसा और हृदय परिवर्तन के मार्ग के भूमि बांट रहा है l राजनीति के क्षेत्र में विनोबा का भूदान आंदोलन कम्युनिस्ट कार्यवाहियों का तगड़ा उत्तर है l विनोबा बिना हिंसा ही संपूर्ण सामाजिक ढांचे में परिवर्तन करना चाहते हैं,वह शांति और क्रांति दोनों चाहते हैं l भूदान के द्वारा जनता को सत्याग्रह की शक्ति मिलेगी और मानवता में उसका विश्वास बढ़ेगा, इससे भारतीय भूमि

व्यवस्था में क्रांति होगी l[19] विनोबा कहते हैं कि भूदान के साथ-साथ मैंने संपत्ति दान यज्ञ कार्यक्रम प्रारंभ कर दिया उसके बगैर भूदान यज्ञ सफल नहीं होगा l वैसे सामुदायिक तौर पर संपत्ति दान यज्ञ का व्यापक प्रचार करने का हमारा इरादा नहीं है, व्यक्तिगत तौर पर प्रेम से जिससे बातें हो सकती है उनके हृदय में,उनके कुटुंब में और उनके विचारों में प्रवेश करके ही हमें यह काम करना है l[20] अर्थात भूदान यज्ञ एवं संपत्ति दान यज्ञ के माध्यम से विनोबा समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता को समाप्त करने का प्रयास कर रहे थे l यह गांधी के विश्वसवृत्त(ट्रस्टीशिप)की अवधारणा से प्राप्त हुआ साथ ही विनोबा मानते थे कि आर्थिक प्रगति तब तक संभव नहीं जब तक जीवन के प्रति जनता के दृष्टिकोण में परिवर्तन न हो, वह तो क्रांति से ही हो सकता है या सामाजिक और आर्थिक मूल्य के पुन निर्धारण से l

क्रांति का मार्ग विध्वंशात्मक होता है, जो राष्ट्र के संपूर्ण जीवन को तीतर - बीतर कर देता है,ऐसी स्थिति में जनता के दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन ही एकमात्र विकल्प है l प्रथम हृदय परिवर्तन, फिर जीवन परिवर्तन और बाद में समाज परिवर्तन, और यह परिवर्तन केवल संपत्ति दान से ही नहीं सम्मति दान से ही होगा l संपत्ति दान यानी अपनी संपत्ति के कुछ हिस्से का दान सम्मति दान का मतलब है, सर्वोदय, शांति,सेवा, ग्रामदान,खादी काम में अपनी सम्मति प्रदान करना l[21]

विकेंद्रीकरण : ग्राम राज्य

विनोबा शक्तिशाली शासन सत्ता की राज्य व्यवस्था को अस्वीकार करते हैं l वे एक ऐसी व्यवस्था चाहते हैं, जहां राज्य सत्ता सीमित हो, शक्तियों का केंद्रीयकरण ना हो,लोकशाही हो जहां जनता स्वयं अपना निर्णय करें, शासन व्यवस्था करें और आवश्यकता होने पर शासन को सहयोग करें, ना की बात-बात पर शासन का मुँह ताके l विनोबा के अनुसार आर्थिक क्षेत्र में साम्य योग्य के अनुसार प्रत्येक गांव में एक राज्य होगा, केंद्र का आधिपत्य उस पर केवल नाम मात्र होगा इस प्रकार धीरे-धीरे हमें ऐसे स्तर पर पहुंच जाएंगे जब अधिकार चाहे वह किसी रूप में हो, अनावश्यक हो जाएगा और धीरे-धीरे वह स्वयं मुक्त समाज को जन्म देकर तिरोहित हो जाएगा l[22]

विनोबा शक्तियों के विकेंद्रीकरण के लिए कर्तव्य विभाजन भी आवश्यक मानते थे यानी सारी कर्म शक्ति,कार्य सत्ता एक केंद्र में केंद्रित न होकर गांव-गांव में निर्माण होनी चाहिए lइसलिए हम चाहते हैं कि हर एक गांव को यह हक हो कि उसे गांव में कौन सी चीज आए और कौन सी चीज न आए इसका निर्णय वह खुद कर सके l अहिंसक राज्य के लिए हम ग्राम राज्य का उद्घोष करते हैं और चाहते हैं कि ग्राम में नियंत्रण की सत्ता हो अर्थात गांव वाले नियंत्रण की सत्ता अपने हाथ में ले लें, यह भी एक जनशक्ति का उदाहरण है l यदि ऐसी जनशक्ति निर्माण शुरू हुई तो उस सरकार को बड़ी मदद पहुंचाने जैसा होगा,

क्योंकि उसी से सैन्य बल का उच्छेद होगा उसके बगैर सैन्य बल का भी उच्छेद नहीं होगा,इसलिए राष्ट्रीय नियोजन की बजाय ग्रामीण नियोजन होना चाहिए l[23]

अंतरराष्ट्रवाद : जय जगत

विनोबा अपने राष्ट्र से प्रेम करते हैं, यहां तक की गांधी के शिष्य के रूप में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न आंदोलन एवं गतिविधियों में भाग लिया, लेकिन विनोबा का राष्ट्रवाद संकीर्ण नहीं अपितु व्यापक हैं, जो संपूर्ण मानवता के हित में है l विनोबा राज्य की शक्ति को भी स्वीकार नहीं करते और प्रत्येक मानव मात्र की स्वतंत्र चेतना में विश्वास करते हैं l विनोबा कहते हैं कि नया युग विश्व राष्ट्र का युग है l भारत देश उसका प्रांत बनेगा हर प्रदेश उसका जिला बनेगा,हर जिला गांव बनेगा और हर गांव एक परिवार बनेगा l आज परिवार छोटा बन गया है उसको गांव तक बढ़ना है, ऐसा होने पर ही विश्व शांति की बात हम कर सकते हैं इसलिए इधर जय जगत और उधर ग्रामदान l[24]

विनोबा के अनुसार धर्म, जाति, वंश, राष्ट्र आदि विभिन्नताओं के पर्दे हटाकर जब तक मानव विश्व को समत्त्व भाव से नहीं देखा जाता,तब तक, सारे सत्कार्य और सारे सुधार नए-नए पंथ, संकुचितताएं और संघर्ष ही निर्माण करते रहेंगे l[25] देश, प्रांत,भाषा या धर्म पर प्रेम रहे लेकिन अभिमान न रहे l अगर भारतीयता का भी अभिमान रखेंगे तो वह भी आज की दुनिया के प्रवाह के विरुद्ध होगा और दुनिया में भी विसंवाद पैदा करेगा इसलिए हम देश की सेवा करें देश पर प्रेम रखें लेकिन अभिमान छोड़ें और हम मानव हैं, इतना महसूस करें l[26]

विनोबा मानते हैं कि धीरे-धीरे सभी देशों की सरहदें टूटने वाली है अब विश्व को सम्मिलित परिवार बनाने की संभावनाएं बढ़ रही है,भावना विशाल हो रही है,इसलिए हमने कहा कि इसके आगे हमारा मंत्र "जय जगत "रहेगा l विनोबा का जय जगत का विचार वसुधैव कुटुंबकम के मन्त्र से प्रेरित है जहाँ समस्त संसार को एक परिवार की दृष्टि से स्वीकार किया जाता है l

निष्कर्ष

विनोबा भावे का राजनीतिक चिंतन आधुनिक राजनीति में नैतिकता के पुनर्स्थापन का प्रयास है। वे राज्य को आवश्यक किंतु सीमित संस्था मानते हैं और सत्ता के स्थान पर सेवा को राजनीति का आधार बनाते हैं। उनका अहिंसा-आधारित दृष्टिकोण न केवल हिंसक क्रांति बल्कि कानूनी दबाव से होने वाले परिवर्तन को भी अपर्याप्त मानता है और हृदय-परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन की मूल शर्त स्वीकार करता है।

सर्वोदय, भूदान, सम्पत्ति-दान, सम्मति दान, ग्रामदान और ग्राम-स्वराज के माध्यम से विनोबा आर्थिक

विषमता, केंद्रीकरण और वर्ग संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान प्रस्तुत करते हैं। 'जय जगत' का उनका उद्घोष संकीर्ण राष्ट्रवाद से ऊपर उठकर विश्व-बंधुत्व और मानव-एकता का संदेश देता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विनोबा भावे का राजनीतिक दर्शन किसी कठोर विचारधारा का निर्माण नहीं करता, बल्कि मानवता के हित में एक लचीला, नैतिक और व्यावहारिक वैकल्पिक मार्ग प्रदान करता है, जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

*सह आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग
सेठ आर. एल. सहरिया
राजकीय पीजी महाविद्यालय, कालाडेरा (जयपुर)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भावे, विनोबा, भूदान यज्ञ, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1954, पृष्ठ संख्या, 9.
2. कालिंदी, अहिंसा की तलाश, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2019, पृष्ठ संख्या,9.
3. विनोबा, सर्वोदय-विचार और स्वराज्य -शास्त्र, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी 1956, पृष्ठ संख्या,174.
4. टिकेकर, इंदु, क्रांति का समग्र दर्शन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1972, पृष्ठ संख्या 2.
5. कालिंदी, अहिंसा की तलाश, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2019, पृष्ठ संख्या, 167.
6. टिकेकर, इन्दु, क्रांति का समग्र दर्शन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1972, पृष्ठ संख्या 29.
7. कालिन्दी, अहिंसा की तलाश, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2019, पृष्ठ संख्या,14.
8. वही, पृष्ठ संख्या, 216
9. विनोबा, सर्वोदय-विचार और स्वराज्य- शास्त्र, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी,1956, पृष्ठ संख्या, 115.
10. मिश्र, डॉ० बाबू राम, भूदान का आर्थिक आधार, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी,1957, पृष्ठ संख्या, 34-35.
11. कालिंदी, अहिंसा की तलाश, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2019, पृष्ठ संखा,134.
12. विनोबा, सर्वोदय-विचार और स्वराज्य- शास्त्र, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1956, पृष्ठ संख्या 133.

13. कालिन्दी, अहिंसा की तलाश, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2019, पृष्ठ संख्या, 141.
14. टिकेकर, इन्दु, क्रांति का समग्र दर्शन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, 1972, वाराणसी, पृष्ठ संख्या, 17.
15. विनोबा, सर्वोदय-विचार और स्वराज्य- शास्त्र, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1956, पृष्ठ संख्या,40.
16. वही, पृष्ठ संख्या,59.
17. मिश्र, डॉ० बाबूराम, भूदान का आर्थिक आधार, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1957, पृष्ठ संख्या,13-14.
18. वही, पृष्ठ संख्या,17
19. विनोबा, सर्वोदय-विचार और स्वराज्य -शान्त्र, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1956, पृष्ठ संख्या, 55.
20. वही, पृष्ठ संख्या, 121.
21. कालिन्दी, अहिंसा की तलाश, सर्वसेवा संघ प्रशन, वाराणसी, 2019, पृरु संख्या,156
22. मिश्र, डॉ० बाबूराम, भूदान का आर्थिक आधार, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1957, पृष्ठ संख्या 56.
23. विनोबा, सर्वोदय-विचार और स्वराज्य शास्त्र, सर्व सेवा संघ ठडावान, वाराणसी, 1956, पृष्ठ संख्या, 114-115.
24. कालिंदी, अहिंसा की तलाश, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2019, पृष्ठ संख्या,178.
25 विनोबा, सर्वोरप-विचार और स्वराज्य शास्त्र, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1956 पृष्ठ संख्या, 64.
26. कालिन्दी, अहिंसा की तलाश, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2019, पृष्ठ संख्या, 154.